K–917

Total Page No. : 5] **[Roll No. .....**

MASL-202

M.A. (Sanskrit) IInd Year Examination Dec., 2023

गद्य एवं पद्य काव्य

Time : 2 Hours] [**Max. Marks :** 70

नोट :- यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। **परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।**

(खण्ड–क)

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट :- खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. महाकवि सुबन्धु की काव्यशैली का वर्णन कीजिए।

2. बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम् की समीक्षा कीजिए।

3. उपमाकालिदासस्य को सोदाहरण समझाइए।

4. सफल गद्यकाव्यकार के रूप में महाकवि अम्बिकादत्त व्यास का मूल्यांकन कीजिए।

5. मेघदूत के अनुसार मेघमार्ग का वर्णन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट :- खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. किसी **एक** श्लोक की व्याख्या कीजिए–

(क) तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबला विप्रयुक्तः स कामी,
नीत्वा मासान् कनकवलयभ्रंशरिक्त-प्रकोष्ठः।
आषढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडा-परिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥

(ख) मार्गं तावच्छृणु कथयतस्त्वत् प्रयाणानुरूपम्,
सन्देशं मे तदनुजलद! श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम्।
खिन्नः खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र
क्षीणः क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चोपभुज्य॥

2. किसी **एक** श्लोक की व्याख्या कीजिए–

(क) आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्ग्य शैलं
वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु।
काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमेत्य
स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो वाष्पमुष्णम्॥

(ख) त्वामासारप्रशमितवनोप्लबं साधु मूर्ध्ना
वक्ष्यत्यध्वश्रमपरितगतं सानुमानाम्रकूटः।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥

3. किन्हीं **दो** सूक्तियों की व्याख्या कीजिए–

(क) कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु॥

(ख) आशाबन्धः कुसुमसहशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।

(ग) कः सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः॥

4. किसी **एक** गद्यखण्ड की व्याख्या कीजिए–

(क) अलं भो अलम्! मया पूर्वमेवचितानि कुसुमानि, त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थापितः, गुरुचरणा अत्र तडागतटे सन्ध्यामुपासते, संस्थापिता मया निखिला सामग्री तेषां समीपे। यां च सप्तवर्षकल्पाम्, यावनत्रासेन निःशब्दं रुदतीम्, परमसुन्दरीम्, कलितमानवदेहमिव सरस्वतीं सान्त्वयन्

मरन्दमधुरा अपः पाययन्, कन्दखण्डानि भोजयन् त्वं त्रियामाया यामत्रमनैषीः, सेयमधुना स्वपिति उद्बुद्ध्य च पुनस्तथैव रोदिष्यति, तत्परिमार्गणीयान्येतस्याः पितरौ गृहं च।

(ख) ततः संवृत्ते किञ्चिदन्धकारे धूपधूमेनैव व्याप्तासु हरित्सु भुशुण्डीं स्कन्धे निधाय निपुणं निरीक्षमाण, आगतप्रत्यागतञ्च विदधानः, प्रताप-दुर्ग-दौवारिकः, कस्यापि पादक्षेप-ध्वनिमिवाश्रौषीत्। ततः स्थिरीभूय पुरतः पश्यन् सत्यपि दीपप्रकाशेऽवतमसवशादागन्तारं कमप्यनवलोकयन्, गम्भीरस्वरेणैवमवादीत्-क कोऽत्र भो ? क कोऽत्र भोः ? इति।

5. किसी **एक** गद्यांश की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) अहो चिररात्राय सुप्तोऽहम् स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयसमयोऽतिवाहितः। सन्ध्योपासनसमयोऽयमस्मद् गुरुचरणानाम् तत्सपदि अवचिनोमि कुसुमानि इति चिन्तयन् कदलीदलमेकमाकुञ्च्य, तृणशकलैः सन्धाय, पुटक विधाय, पुष्पावचयं कर्तुमारेभे। वटुरसौ आकृत्या सुन्दरः वर्णेन गौरः जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चासीत्॥

(ख) दौवारिकः संन्यासिन्! संन्यासिन्! बहुक्तम्, विरम, न वयं दौवारिका ब्रह्मणोऽप्याज्ञां प्रतीक्षामहे। किन्तु यो वैदिकधर्मरक्षाव्रती, यश्च संन्यासिनां ब्रह्मचारिणां तपस्विनाञ्च संन्यासस्य ब्रह्मचर्यस्य तपसश्चान्तरायाणां हन्ता, येन च वीरप्रसविनीयमुच्यते कोङ्कणदेशभूमिः तस्यैव महाराज-शिववीरस्याज्ञां वयं शिरसा वहामः।

6. ऐतिहासिक उपन्यास के रूप में शिवराजविजय की समीक्षा कीजिए।

7. गीतिकाव्य के रूप में मेघदूतम् का मूल्यांकन कीजिए।

8. शिवराजविजय के द्वितीय निःश्वास का विषय-वस्तु सारांश में लिखिए।

****